RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
मार्च
19
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

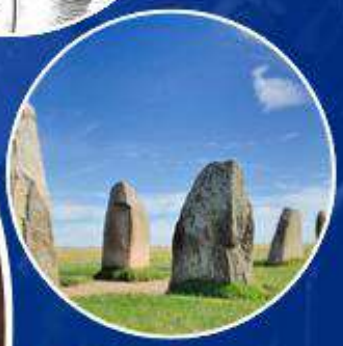

By Ankit Avasthi Sir

रायसीना डायलॉग 2025 / Raisina Dialogue 2025

संदर्भ:

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन, 18 से अधिक देशों के विदेश मंत्री, प्रमुख वैश्विक कंपनियों के शीर्ष अधिकारी और विदेश नीति विशेषज्ञ **राष्ट्रीय राजधानी में वार्षिक रायसीना संवाद** में भाग लेंगे।

रायसीना डायलॉग:

- **परिचय:** रायसीना डायलॉग एक बहुपक्षीय सम्मेलन है, जो हर साल नई दिल्ली, भारत में आयोजित होता है।
- **उद्देश्य:** यह भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर भारत का प्रमुख सम्मेलन है, जिसका उद्देश्य वैश्विक समुदाय के सामने मौजूद सबसे कठिन चुनौतियों का समाधान करना है।
- **प्रतिभागी:** राजनीति, व्यापार, मीडिया और सिविल सोसाइटी के नेता इसमें शामिल होते हैं और विश्व की स्थिति पर चर्चा करते हैं व समकालीन मुद्दों पर सहयोग के अवसर तलाशते हैं।
- **आयोजक:** यह **ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (Observer Research Foundation)** द्वारा विदेश मंत्रालय के साथ साझेदारी में आयोजित किया जाता है।

रायसीना डायलॉग 2025: प्रमुख मुद्दे

1. **यूक्रेन संघर्ष और अमेरिका-रूस संबंध:** यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा और अमेरिकी खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड की उपस्थिति इंगित करती है कि संघर्षविराम वार्ताओं और बदलते वैश्विक गठबंधनों पर गंभीर चर्चा होगी।
2. **ट्रम्प की विदेश नीति में बदलाव:** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की नीतियों का वैश्विक व्यापार, नाटो संबंधों और इंडो-पैसिफिक रणनीति पर प्रभाव पर विचार-विमर्श होगा।
3. **क्वाड और इंडो-पैसिफिक रणनीति:** भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका की नौसेना नेतृत्व की उच्चस्तरीय पैनल चर्चा में समुद्री सहयोग को बढ़ाने पर बात होगी, जो चीनी आक्रामकता का सामना करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
4. **परमाणु और सुरक्षा चिंताएँ:** अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के प्रमुख राफेल ग्रॉसी की भागीदारी से परमाणु अप्रसार से जुड़े मुद्दे, विशेष रूप से ईरान परमाणु मुद्दे पर चर्चा होगी।

रायसीना डायलॉग 2025 का विषय है - कालचक्र: लोग, शांति, ग्रह।

भारत की विदेश नीति के लिए महत्व:

1. **वैश्विक मुद्दों में मध्यस्थ की भूमिका निभाना:** यूक्रेन संकट, इंडो-पैसिफिक और व्यापार विवादों में भारत की मध्यस्थता की भूमिका।
2. **ग्लोबल साउथ में प्रभाव बढ़ाना:** आर्थिक और रणनीतिक रूप से प्रभाव को विस्तार देना।
3. **क्षेत्रीय नेतृत्व को मजबूत करना:** दक्षिण एशिया और इंडो-पैसिफिक क्षेत्रों में संबंधों को मजबूत करना।
4. **वैश्विक शक्ति संतुलन बनाए रखना:** अमेरिका, रूस, चीन और यूरोपीय संघ के साथ संबंधों को संतुलित करना।

निष्कर्ष:

भारत की विदेश नीति वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में एक संतुलनकारी भूमिका निभाने की ओर अग्रसर है। वैश्विक शक्ति संतुलन बनाए रखना, दक्षिण एशिया और इंडो-पैसिफिक क्षेत्रों में नेतृत्व को मजबूत करना, तथा ग्लोबल साउथ में अपनी आर्थिक और रणनीतिक उपस्थिति का विस्तार करना इसके प्रमुख उद्देश्य हैं। साथ ही, यूक्रेन संकट और व्यापार विवादों जैसे जटिल मुद्दों में मध्यस्थ की भूमिका निभाने का प्रयास भारत को एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है।

भारत में चुनाव सुधार / Electoral Reforms in India

संदर्भ:

भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने **चुनावी प्रक्रिया** को मजबूत करने पर चर्चा के लिए राजनीतिक दलों को आमंत्रित किया है। इस बैठक का उद्देश्य चुनावों में पारदर्शिता, निष्पक्षता और दक्षता बढ़ाने के लिए सुझाव एकत्र करना है, जिससे भारत के लोकतांत्रिक ढांचे को और सशक्त बनाया जा सके।

चुनावी प्रणाली से संबंधित समस्याएँ:

1. राजनीति का अपराधीकरण:

- **अपराधिक पृष्ठभूमि वाले नेता:** लोकतांत्रिक सुधार संघ (Association of Democratic Reforms) के अनुसार, 2024 में चुने गए 543 सांसदों में से 251 (46%) पर आपराधिक मामले दर्ज हैं।
- **गंभीर आरोप:** इनमें से 170 (31%) सांसदों पर बलात्कार, हत्या, हत्या का प्रयास और अपहरण जैसे गंभीर आपराधिक आरोप हैं।

2. चुनावी खर्च के नियमों का उल्लंघन:

- **खर्च की सीमा का उल्लंघन:** उम्मीदवार नियमित रूप से खर्च की सीमा का उल्लंघन करते हैं।
- **राजनीतिक दलों के खर्च पर कोई सीमा नहीं:** राजनीतिक दलों के खर्च पर कोई सीमा नहीं है।
- **भ्रष्टाचार और अनुचित लाभ:** सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के अनुसार, 2024 के लोकसभा चुनावों में लगभग ₹1,00,000 करोड़ का खर्च हुआ, जिससे भ्रष्टाचार और अनुचित प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला।

3. चुनाव प्रचार प्रक्रिया में समस्याएँ:

- **अनुचित शब्दों का उपयोग:** अधिकांश पार्टियों के स्टार प्रचारकों द्वारा विरोधी नेताओं के खिलाफ अभद्र और अनुचित शब्दों का प्रयोग किया गया।
- **जाति/सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काना:** मतदाताओं की जातिगत और सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काना।
- **बिना प्रमाण के आरोप लगाना:** विरोधी नेताओं के खिलाफ बिना प्रमाण के आरोप लगाना।

4. डुप्लीकेट EPIC नंबर की समस्या:

- **एक जैसे EPIC नंबर:** पश्चिम बंगाल, गुजरात, हरियाणा और पंजाब जैसे विभिन्न राज्यों में समान EPIC नंबर पाए गए।
- **समस्या का कारण:** यह समस्या पहले के विकेंद्रीकृत EPIC नंबर आवंटन प्रणाली के कारण उत्पन्न हुई।

भारत में चुनावों से संबंधित कानूनी प्रावधान:

1. अनुच्छेद 324 (Article 324): यह अनुच्छेद चुनाव आयोग (EC) को संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनावों की **मतदाता सूची की तैयारी और उनके संचालन की निगरानी, निर्देशन और नियंत्रण** का अधिकार देता है।

2. जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 (Representation of the People Act, 1950): यह अधिनियम और संबंधित नियम, जैसे कि **मतदाताओं का पंजीकरण नियम, 1960 (Registration of Electors Rules, 1960)**, मतदाता सूची की तैयारी को नियंत्रित करते हैं।

- यह मतदाताओं के पंजीकरण और सही मतदाता सूचियों को बनाए रखने की प्रक्रिया को निर्धारित करता है।

भारत में मतदान प्रक्रिया का विकास

1. **पहला आम चुनाव (1952 और 1957):**
   - प्रत्येक उम्मीदवार के लिए अलग-अलग बैलेट बॉक्स (मतपेटी) रखे जाते थे, जिन पर उनके चुनाव चिह्न होते थे।
   - मतदाताओं को खाली बैलेट पेपर उस उम्मीदवार के बॉक्स में डालना पड़ता था जिसे वे वोट देना चाहते थे।
2. **तीसरा आम चुनाव (1962):**
   - **उम्मीदवारों के नाम और चिह्नों के साथ बैलेट पेपर** की शुरुआत हुई।
   - खाली बैलेट डालने के बजाय, अब मतदाता बैलेट पेपर पर अपने वोट को चिह्नित करते थे।
3. **इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) (2004):**
   - लोकसभा चुनावों में सभी निर्वाचन क्षेत्रों में EVM का उपयोग किया गया।
   - इससे मतदान और मतगणना की प्रक्रिया सरल और तेज़ हो गई।
4. **वोटर वेरीफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) (2019):**
   - 2019 से सभी EVM में **100% VVPAT स्लिप्स** की व्यवस्था की गई।
   - इससे मतदाता अपने वोट की पुष्टि कर सकते हैं और पारदर्शिता सुनिश्चित होती है।

चुनाव आयोग द्वारा सुझाए गए सुधार:

- **राजनीतिक दलों के खर्च की सीमा** – प्रत्याशियों की तरह दलों के खर्च पर भी सीमा तय करने का प्रस्ताव।
- **राज्य द्वारा वित्त पोषण** – चुनाव नहीं, बल्कि राजनीतिक दलों को राज्य द्वारा वित्तीय सहायता देने की सिफारिश।
- **निजी दान पर प्रतिबंध** – राजनीतिक दलों को निजी फंडिंग से मुक्त कर, राज्य-नियंत्रित वित्तीय व्यवस्था लागू करने की मांग।
- **राष्ट्रीय चुनाव कोष** – एक स्वतंत्र कोष स्थापित कर, टैक्स-फ्री दान स्वीकार करने और प्रदर्शन के आधार पर दलों को फंड आवंटित करने का सुझाव।
- **2023 संशोधन अधिनियम में सुधार** – चुनाव आयुक्तों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने और सरकार की मनमर्जी से बचाने की आवश्यकता।

मुदुमल मेनहिर्स / Mudumal Menhirs

संदर्भ:

तेलंगाना के **नारायणपेट जिले** में स्थित **मुदुमल मेगालिथिक मेन्हिर्स** को **यूनेस्को की अस्थायी विश्व धरोहर सूची 2025** में शामिल किया गया है। ये प्राचीन पत्थर संरचनाएँ **लौह युग** की मानी जाती हैं और दक्षिण भारत की प्रारंभिक मेगालिथिक परंपराओं के महत्वपूर्ण पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक साक्ष्य प्रदान करती हैं।

मेनहिर्स क्या हैं?

- मेनहिर्स **बड़े खड़े पत्थर** होते हैं, जो आमतौर पर ऊपर की ओर पतले होते हैं।
- ये मानव निर्मित होते हैं, जिन्हें इंसानों द्वारा आकार देकर और एक विशेष स्थान पर स्थापित किया जाता है।
- 'Menhir' शब्द ब्रिटोनिक भाषा के शब्दों **'स्टोन' (पत्थर) और 'लॉन्ग' (लंबा)** से लिया गया है।
- सबसे बड़ा मेनहिर **'ग्रैंड मेनहिर ब्रिसे' (Grand Menhir Brisé) फ्रांस** में स्थित है, जिसकी ऊंचाई कभी 20.6 मीटर थी।

ऐतिहासिक संदर्भ:

- मेनहिर्स का निर्माण **नवपाषाण युग (Neolithic Age)** और प्रारंभिक कांस्य युग (Bronze Age) के समय में हुआ था, लगभग 4,800 से 3,800 वर्ष पहले।
- यूरोप में सबसे पुराने मेनहिर्स लगभग 7,000 साल पुराने हैं।
- मुदुमल मेनहिर्स (Mudumal Menhirs) भारत में प्रारंभिक स्मारकीय वास्तुकला (Monumental Architecture) के रूप में माने जाते हैं।

मेनहिर्स के स्थान (Locations of Menhirs):

1. यूरोप (Europe):

- फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल और ब्रिटेन में पाए जाते हैं।
- उदाहरण: ग्रैंड मेनहिर ब्रिसे (Grand Menhir Brisé), ब्रिटनी, फ्रांस।

2. भारत (India): मुख्यत: तेलंगाना, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर भारत में स्थित।

- **मुदुमल मेनहिर्स (Mudumal Menhirs), तेलंगाना:**
  - भारत का सबसे बड़ा मेगालिथिक वेधशाला (Megalithic Observatory) माना जाता है।
  - कुछ मेनहिर्स संक्रांति (Solstices) के समय सूर्य की स्थिति के साथ संरेखित होते हैं, जो खगोलीय महत्व (Astronomical Significance) की ओर संकेत करते हैं।

मेनहिर्स की विशेषताएं (Features of Menhirs):

1. मानव निर्मित संरचनाएँ (Man-Made Structures): इन्हें इंसानों द्वारा तराशकर और विशेष स्थानों पर स्थापित किया गया है।

2. आकार (Size):

- यह कई मीटर ऊंचे हो सकते हैं।
- उदाहरण: ग्रैंड मेनहिर ब्रिसे (Grand Menhir Brisé) की ऊंचाई 20.6 मीटर थी।

3. कार्य: धार्मिक अनुष्ठान, खगोलीय अध्ययन या दफन प्रक्रिया (Burial) के लिए उपयोग किए जाते थे।

4. पवित्र महत्व (Sacred Value): कुछ मेनहिर्स को देवी-देवताओं के रूप में पूजा जाता है, जैसे तेलंगाना के मुदुमल मेनहिर्स में देवी येल्लम्मा (Goddess Yellamma) के रूप में।

यूनेस्को मान्यता के मापदंड:

मेनहिर्स को यूनेस्को की मान्यता मिलने के दो मुख्य कारण हैं:

1. प्राचीन संस्कृतियों का तकनीकी और खगोलीय ज्ञान:

- मेनहिर्स प्राचीन सभ्यताओं के वैज्ञानिक और खगोलीय ज्ञान को दर्शाते हैं।
- इनका निर्माण और सूर्य की स्थिति के साथ इनका संरेखण, खगोलीय महत्व को स्पष्ट करता है।

2. समाज के मूल्यों और विश्वासों की झलक: मेनहिर्स के निर्माण में किया गया कठिन परिश्रम यह दर्शाता है कि वे उन समुदायों के लिए कितने महत्वपूर्ण थे।

CAG की नियुक्ति / Appointment of CAG

संदर्भ:

सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार की विशेषाधिकार प्राप्त **राष्ट्रपति के माध्यम से नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की नियुक्ति** करने की प्रक्रिया को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई कर रहा है।

- याचिका में तर्क दिया गया है कि जब कार्यपालिका अकेले नियुक्ति प्रक्रिया को नियंत्रित करती है, तो **नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की स्वतंत्रता प्रभावित होती है।**
- याचिकाकर्ता ने **अधिक पारदर्शी और गैर-पक्षपाती चयन प्रक्रिया** अपनाने का सुझाव दिया है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG): CAG का मुख्य कार्य संघ, राज्य सरकारों और पंचायती राज संस्थाओं की वित्तीय जवाबदेही की निगरानी करना है।

संविधान संबंधी प्रावधान (Constitutional Provisions):

1. **अनुच्छेद 148 (Article 148):**
   - CAG की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और उसे हटाने की प्रक्रिया वही है जो सुप्रीम कोर्ट के जज के लिए होती है।
   - CAG के वेतन, भत्ते और सेवा की शर्तें संसद द्वारा निर्धारित की जाती हैं और नियुक्ति के बाद इनके विरुद्ध कोई बदलाव नहीं किया जा सकता।
   - CAG को अपने पद छोड़ने के बाद किसी भी अन्य पद के लिए अयोग्य माना जाता है।
2. **अनुच्छेद 149 (Article 149):** CAG का कार्य संघ और राज्यों के खातों का ऑडिट करना है, जैसा कि कानून द्वारा निर्धारित किया गया है।
   - यह वही कार्य जारी रखता है जो संविधान के लागू होने से पहले भारत के महालेखापरीक्षक द्वारा किया जाता था।
3. **अनुच्छेद 150 (Article 150):** संघ और राज्यों के खातों को किस रूप में रखा जाएगा, इसका निर्धारण राष्ट्रपति द्वारा CAG की सलाह पर किया जाता है।
4. **अनुच्छेद 151 (Article 151):**
   - CAG की ऑडिट रिपोर्टें संघ के मामलों में राष्ट्रपति को सौंपी जाती हैं, जो उन्हें संसद के सामने प्रस्तुत करवाता है।
   - राज्य मामलों में ये रिपोर्टें संबंधित राज्यपाल को सौंपी जाती हैं, जो उन्हें राज्य की विधानसभा के सामने प्रस्तुत करवाता है।
5. **अनुच्छेद 279 (Article 279):** CAG करों और शुल्कों की "शुद्ध प्राप्ति" (Net Proceeds) को प्रमाणित करता है और उसका प्रमाण अंतिम होता है।

समस्याएँ और चिंताएँ (Issues and Concerns):

1. CAG की नियुक्ति प्रक्रिया में समस्या:

- यह तर्क दिया जाता है कि कार्यपालिका (Executive) द्वारा नियंत्रित CAG की नियुक्ति प्रक्रिया संविधान का उल्लंघन करती है।
- कार्यपालिका, CAG की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकती है, जिससे इसे एक निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ निगरानीकर्ता (Neutral Watchdog) के रूप में कमजोर किया जा सकता है।

2. **CAG के कार्यों में हाल की समस्याएँ:**
   - ऑडिट में देरी, संघ सरकार के ऑडिट्स में कमी और भर्ती में भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए हैं।
   - ये समस्याएँ CAG की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता पर सवाल उठाती हैं।
3. **सार्वजनिक निधि प्रबंधन में अनियमितताएँ:** हाल की CAG रिपोर्टों में सार्वजनिक धन प्रबंधन में अनियमितताओं का खुलासा हुआ है, जैसे कि दिल्ली की आबकारी नीति और उत्तराखंड के प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।
4. **कार्यपालिका और CAG के बीच तनाव:**
   - इन रिपोर्टों के समय और प्रस्तुतीकरण को लेकर कार्यपालिका और CAG के बीच तनाव उत्पन्न हो गया है।
   - कार्यपालिका के हस्तक्षेप से CAG की निष्पक्षता और स्वतंत्रता को खतरा हो सकता है।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियाँ:

- **न्यायमूर्ति सूर्य कांत** ने सवाल उठाया कि क्या **न्यायिक दखल संविधान के अनुच्छेद 148 को बदलने जैसा होगा?**
- **संविधान में नियुक्ति प्रक्रिया स्पष्ट नहीं** है, यह पूरी तरह से कार्यपालिका के हाथ में है।
- बेंच ने कहा कि **संस्थानों पर विश्वास होना चाहिए, लेकिन याचिका पर विचार किया जाएगा।**

आगे का रास्ता:

- यह मामला **वित्तीय जवाबदेही** को प्रभावित करने वाला **ऐतिहासिक निर्णय** साबित हो सकता है।
- यदि **सुप्रीम कोर्ट सुधारों की सिफारिश करता है**, तो **संसद को नई नियुक्ति प्रक्रिया के लिए कानून बनाना पड़ सकता है।**
- भले ही फैसला जो भी हो, यह बहस **संवैधानिक संस्थाओं की स्वतंत्रता को मजबूत करने की जरूरत** को उजागर करती है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा सहयोग / India-Australia Defence Cooperation

संदर्भ:

भारत और ऑस्ट्रेलिया **समुद्री, स्थलीय और वायु क्षेत्रों** में सहयोग और **अंतर-संचालन** को मजबूत करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों देशों ने **सामुद्रिक डोमेन जागरूकता, सूचनाओं के आदान-प्रदान, रक्षा उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग** को प्राथमिकता देने के साथ-साथ **एक-दूसरे के क्षेत्रों से तैनाती और बहुपक्षीय भागीदारों के साथ सहयोग** को बढ़ाने का निर्णय लिया।

भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा सहयोग: मुख्य बिंदु

1. रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाना:

- द्विपक्षीय संबंधों से परे क्षेत्रीय और बहुपक्षीय ढाँचे में तालमेल:
  - **क्वाड (भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका):** इंडो-पैसिफिक सुरक्षा ढाँचे को मजबूत करना।
  - **आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस (ADMM-Plus):** क्षेत्रीय सुरक्षा संवादों का विस्तार।
  - **हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA):** समुद्री सुरक्षा और ब्लू इकोनॉमी में सहयोग को बढ़ावा देना।

2. रक्षा उद्योग और विज्ञान-तकनीक सहयोग:

- रक्षा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, सह-विकास और सैन्य उपकरणों के सह-उत्पादन पर चर्चा।
- उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग।

3. समुद्री सुरक्षा और इंटरऑपरेबिलिटी में सुधार:

- समुद्री क्षेत्र में जागरूकता और जानकारी साझा करने में सहयोग।
- AUSINDEX और मालाबार जैसी संयुक्त नौसेना अभ्यासों को मजबूत करना।

भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा साझेदारी का महत्व:

1. रक्षा सहयोग:

- **व्यापक रणनीतिक साझेदारी (2020):** भारत और ऑस्ट्रेलिया ने अपनी रक्षा साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया।
- **महत्वपूर्ण समझौते:** 2021 में **म्यूचुअल लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट (MLSA)** पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे रक्षा आपूर्ति और सहयोग को बढ़ावा मिला।

2. हिंद-प्रशांत सुरक्षा एवं समुद्री रणनीति:

- **क्षेत्रीय चुनौतियां:** चीन की आक्रामक गतिविधियों से **दक्षिण चीन सागर** में सुरक्षा चुनौतियां बढ़ रही हैं।
- **नौसैनिक सहयोग:** भारत और ऑस्ट्रेलिया दोनों समुद्री शक्तियां हैं और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए नौसैनिक सहयोग को मजबूत कर रहे हैं।

3. उभरते खतरों का सामना:

- **साइबर सुरक्षा:** डिजिटल युग में साइबर हमलों से निपटने के लिए दोनों देश मिलकर काम कर रहे हैं।
- **अंतरिक्ष सुरक्षा:** सैन्य उद्देश्यों के लिए उपग्रह सुरक्षा और अंतरिक्ष तकनीक में सहयोग।
- **हाइब्रिड युद्ध रणनीति:** आधुनिक युद्ध तकनीकों से निपटने के लिए संयुक्त रक्षा अनुसंधान।

4. रक्षा व्यापार एवं औद्योगिक सहयोग:

- **'मेक इन इंडिया' और ऑस्ट्रेलियाई रक्षा उद्योग की रणनीति का तालमेल।**
- **संभावित निवेश क्षेत्र:**
  - मिसाइल सिस्टम और रडार तकनीक
  - मानव रहित हवाई और नौसैनिक प्लेटफॉर्म
  - संयुक्त जहाज निर्माण परियोजनाएं

5. रणनीतिक स्वायत्तता और रक्षा साझेदारी में विविधता:

- **ऑस्ट्रेलिया:** पारंपरिक सहयोगियों (अमेरिका, ब्रिटेन) पर निर्भरता कम करके भारत के साथ रक्षा संबंध मजबूत कर रहा है।
- **भारत:** इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपने गठजोड़ को व्यापक कर रहा है, जिससे अमेरिका, फ्रांस और जापान के साथ संबंधों को भी बल मिल रहा है।

आगे की राह (Way Forward):

- **रक्षा सहयोग विस्तार** - संयुक्त सैन्य अभ्यास, इंटेलिजेंस शेयरिंग और साइबर सुरक्षा को मजबूत करना।
- **हिंद-प्रशांत में भूमिका** - समुद्री सुरक्षा बढ़ाना, चीन की आक्रामकता का सामना करना और क्वाड जैसी साझेदारियों को गहरा करना।
- **रक्षा औद्योगिक साझेदारी** - मिसाइल, ड्रोन और रक्षा उपकरणों के संयुक्त उत्पादन व शोध में सहयोग बढ़ाना।
- **रणनीतिक स्वायत्तता** - नई साझेदारियों को बढ़ावा देना और स्थानीय रक्षा उत्पादन को प्राथमिकता देना।
- **नीतिगत व कूटनीतिक समन्वय** - रक्षा नीति समन्वय और इंडो-पैसिफिक में साझेदार देशों के साथ सहयोग बढ़ाना।

हिमस्खलन / Avalanche

संदर्भ:

उत्तराखंड के **चमोली जिले** में **माणा दर्रा** के पास सीमा सड़क संगठन (BRO) के परियोजना स्थल पर एक हिमस्खलन हुआ, जिससे निर्माण कार्य प्रभावित हुआ।

हिमस्खलन क्या है?

परिभाषा: हिमस्खलन बर्फ, बर्फ के टुकड़े और/या चट्टानों का एक बड़ा हिस्सा होता है, जो तेज़ी से ढलान या पहाड़ से नीचे की ओर गिरता है।

कारण:

- **प्राकृतिक कारण:** भारी वर्षा, भूकंप या बर्फ की परतों (Snowpack) का कमजोर होना।
- **मानव गतिविधियाँ:** स्कीइंग, स्नोबोर्डिंग या अन्य जानवरों की गतिविधियों के कारण भी हिमस्खलन हो सकता है।

संरचना: मुख्य रूप से यह बहती हुई बर्फ और हवा से बना होता है, लेकिन इसमें बर्फ के टुकड़े, चट्टानें और पेड़ भी शामिल हो सकते हैं।

खतरा: हिमस्खलन अत्यधिक खतरनाक हो सकता है, जिससे उसमें फंसे लोगों को दम घुटना, चोट लगना या ठंड लगना जैसी समस्याएँ हो सकती हैं।

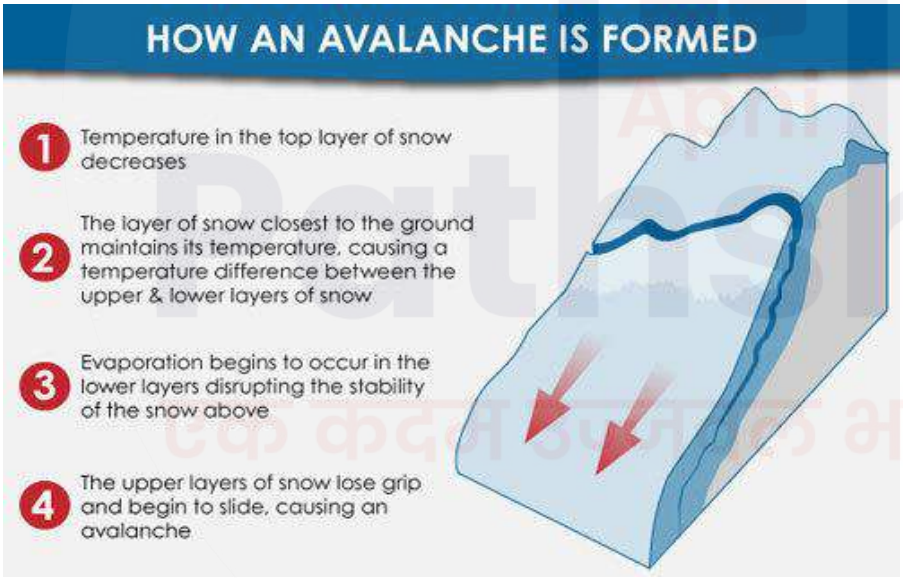

हिमस्खलनों के प्रकार

1. **ढीला बर्फ हिमस्खलन (Loose Snow Avalanche):** यह खड़ी ढलानों (>40°) पर ढीली और कमजोर बर्फ के गिरने से होता है।
2. **स्लैब हिमस्खलन (Slab Avalanche):**
   - यह बड़े और ठोस बर्फ की परत के टूटकर तेजी से फिसलने से होता है।
   - यह सबसे खतरनाक होता है और इसकी गति 100 किमी/घंटा तक हो सकती है।
3. **फिसलता हुआ हिमस्खलन (Gliding Avalanche):** यह तब होता है जब पूरी बर्फ की परत चिकनी सतहों पर फिसलती है।

माणा गांव में हिमस्खलन और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संवेदनशीलता के कारण:

1. उच्च ऊंचाई वाला स्थान:

- माणा गांव हिमालय के ऊपरी भाग में समुद्र तल से 10,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।
- यहाँ भारी बर्फबारी और कठोर मौसम होता है, जो हिमस्खलन के खतरे को बढ़ाता है।

2. भूगर्भीय अस्थिरता: हिमालय क्षेत्र विवर्तनिक रूप से सक्रिय है, जिससे यह इलाका भूस्खलन, हिमस्खलन और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

3. मौसमी जलवायु चरम स्थितियाँ: कठोर सर्दियों में भारी बर्फ जमा हो जाती है, जिससे अस्थिर बर्फ की परतें बनती हैं जो हिमस्खलन का कारण बन सकती हैं।

4. निर्माण और मानव गतिविधियाँ: बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइजेशन (BRO) द्वारा सड़क निर्माण जैसी बुनियादी ढांचे की परियोजनाएँ नाज़ुक पर्यावरण को प्रभावित करती हैं और आपदा जोखिमों को बढ़ाती हैं।

5. ग्लेशियल क्षेत्रों के निकटता: ग्लेशियर क्षेत्रों के पास होना, जहाँ पिघलती बर्फ और अस्थिर बर्फ की परतें बर्फीले तूफान की संभावना को बढ़ा देती हैं।

भारत में हिमस्खलन संभावित क्षेत्र (Avalanche Prone Areas in India):

1. हिमालय क्षेत्र: हिमालय विशेष रूप से हिमस्खलनों के लिए प्रसिद्ध है, विशेषकर पश्चिमी हिमालय जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बर्फीले क्षेत्र।

2. जम्मू और कश्मीर: कश्मीर और गुरेज़ घाटियों के ऊँचे हिस्से, कारगिल और लद्दाख के क्षेत्र, और कुछ प्रमुख सड़कें।

3. हिमाचल प्रदेश: चंबा, कुल्लू-स्पीति और किन्नौर के क्षेत्र।

4. उत्तराखंड:

- **संवेदनशील क्षेत्र:** टेहरी गढ़वाल और चमोली जिलों के कुछ हिस्से।

यूनेस्को की अस्थायी सूची / UNESCO Tentative List

संदर्भ:

यूनेस्को ने भारत के **छह नए स्थलों** को अपनी **अस्थायी सूची** में जोड़ा है, जिससे देश की कुल सूचीबद्ध स्थलों की संख्या **62** हो गई है।

UNESCO Tentative List:

Tentative List: यह सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर स्थलों की सूची होती है, जिन्हें कोई देश UNESCO World Heritage Status के लिए नामांकित करना चाहता है।

स्थलों को सूची में जोड़ने की प्रक्रिया:

1. **OUV मानदंड:** स्थल का अद्वितीय वैश्विक मूल्य (OUV) होना आवश्यक।
2. **समय सीमा:** नामांकन से 1 साल पहले सूची प्रस्तुत करना ।
3. **समीक्षा:** हर 10 साल में पुनरीक्षण की सिफारिश की जाती है।

भारत की UNESCO Tentative List में जोड़े गए छह नए स्थल:

1. कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान (छत्तीसगढ़)

- यह जैव विविधता से भरपूर क्षेत्र है, जिसमें दुर्लभ चूना पत्थर की गुफाएँ और घने जंगल शामिल हैं।
- बस्तर हिल मैना जैसी विशिष्ट प्रजातियों का घर है।

2. मुधुमल मेगालिथिक मेनहिर्स (तेलंगाना): यह प्राचीन कब्रिस्तान है जिसमें प्रागैतिहासिक मेगालिथिक संरचनाएँ हैं।

3. अशोक के शिलालेख स्थल (Multiple States)

- सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तंभ और शिलालेख।
- बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा और कर्नाटक में फैले हुए हैं, जो मौर्य शासन और बौद्ध शिक्षाओं को दर्शाते हैं।

4. चौसठ योगिनी मंदिर (Serial Nomination) (Multiple States)

- गोलाकार मंदिर जो 64 योगिनी देवियों को समर्पित हैं और तांत्रिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं।
- मध्य प्रदेश, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में पाए जाते हैं।

5. गुप्त मंदिर (Serial Nomination) (उत्तरी भारत)

- गुप्त काल (4वीं - 6वीं शताब्दी ईस्वी) की शास्त्रीय भारतीय मंदिर वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इन मंदिरों में बारीक नक्काशी, शिखर और कलात्मक उत्कृष्टता देखने को मिलती है।

6. बुंदेला राजाओं के किले-महल (मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश)

- बुंदेला राजपूतों द्वारा निर्मित मध्यकालीन किले-महल।
- प्रमुख संरचनाओं में ओरछा किला और दतिया महल शामिल हैं, जो राजपूत और मुगल स्थापत्य शैली का मिश्रण दर्शाते हैं।

बौद्ध विषयगत सर्किट / Buddhist Thematic Circuit

संदर्भ:

पर्यटन मंत्रालय **Swadesh Darshan (SD)** और **Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual, Heritage Augmentation Drive (PRASHAD)** योजनाओं के तहत **राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेशों** को **आर्थिक सहायता** प्रदान करता है। इन योजनाओं के तहत **बौद्ध पर्यटन** के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है।

- **स्वदेश दर्शन योजना** के तहत **'बौद्ध सर्किट'** को एक **थीमेटिक सर्किट** के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- इससे **बौद्ध तीर्थ स्थलों** का आधुनिकीकरण और बुनियादी ढांचे का विकास किया जाएगा।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और बौद्ध पर्यटन से जुड़ी पहल

संरक्षण और सार्वजनिक सुविधाएं:

- **संस्कृति मंत्रालय** के तहत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) संरक्षित स्मारकों के संरक्षण और रखरखाव का कार्य करता है।
- विभिन्न स्मारकों, विशेष रूप से संरक्षित बौद्ध स्थलों पर सार्वजनिक सुविधाएं उपलब्ध कराए जाते हैं।

पहला एशियाई बौद्ध सम्मेलन (ABS):

- पहला एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन 5 से 6 नवंबर तक दिल्ली में आयोजित किया गया।
- इस सम्मेलन का उद्देश्य एशियाई देशों के बीच धार्मिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देना था।
- सम्मेलन में **26 एशियाई देशों के 130 विदेशी प्रतिनिधि, 12 देशों के राजनयिक** और महायान एवं थेरवाद परंपरा के 40-40 भिक्षु शामिल हुए।
- एशियाई बौद्ध सम्मेलन प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित किया जाएगा।

बौद्ध पर्यटन विकास से जुड़ी प्रमुख योजनाएं

PRASHAD योजना: **युक्सोम, सिक्किम** में **चार संरक्षक संतों** के तीर्थस्थल के विकास के लिए **₹33.32 करोड़** की परियोजना **2020-21** में मंजूर हुई।

SASCI योजना (विशेष सहायता योजना): पर्यटन मंत्रालय ने आइकॉनिक टूरिस्ट सेंटरों के वैश्विक स्तर पर विकास हेतु दिशा-निर्देश जारी किए।

- **भारत सरकार ने 26 नवंबर 2024 को 'श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश' में 'समेकित बौद्ध पर्यटन विकास' परियोजना को मंजूरी दी।**
- इस परियोजना की कुल लागत **₹80.24 करोड़** निर्धारित की गई।

शिष्टाचार स्क्वाड / shishtaachaar Squad

संदर्भ:

दिल्ली पुलिस ने **महिलाओं के खिलाफ अपराध रोकने और सुरक्षा बढ़ाने** के लिए **'शिष्टाचार' एंटी-ईव टीजिंग स्क्वॉड** गठित करने की घोषणा की है। यह पहल **राष्ट्रीय राजधानी में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने** की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

Shishtachar Squad (शिष्टाचार स्क्वाड):

शिष्टाचार स्क्वाड दिल्ली पुलिस की एक पहल है, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की सुरक्षा में सुधार करना है। यह उत्तर प्रदेश के एंटी-रोमियो स्क्वाड से प्रेरित है और इसके अंतर्गत रोकथाम, हस्तक्षेप और पीड़ित सहायता जैसे विभिन्न उपाय शामिल हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **संरचना:** प्रत्येक स्क्वाड में एक इंस्पेक्टर, एक सब-इंस्पेक्टर, पाँच पुरुष अधिकारी, चार महिला अधिकारी और एंटी-ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की तकनीकी सहायता शामिल होगी।
2. **क्षेत्र की पहचान:** जिले के डीसीपी (DCP) उन स्थानों और क्षेत्रों की सूची तैयार करेंगे, जहाँ महिलाओं की सुरक्षा के लिए खतरे की संभावना अधिक होती है।
3. **गश्त:** स्क्वाड प्रतिदिन कम से कम दो संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त करेगा और वहाँ जागरूकता अभियान चलाएगा।
4. **अचानक जाँच:** सादी वर्दी में अधिकारी सार्वजनिक परिवहन में अचानक निरीक्षण करेंगे और डीटीसी (DTC) स्टाफ से बातचीत कर उत्पीड़न के मामलों की रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करेंगे।

'शिष्टाचार' परियोजना: ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि:

- **चुनावी वादा:** 2025 दिल्ली विधानसभा चुनाव में बीजेपी के घोषणापत्र में **'एंटी-रोमियो स्क्वॉड'** बनाने और **CCTV निगरानी बढ़ाने** का वादा किया गया था।
- **दिल्ली पुलिस की पहल:** यह पहल **नागरिक सुरक्षा और अपराध रोकथाम** को सशक्त बनाने की दिशा में एक कदम है।
- **महिला सुरक्षा पर जोर:** इस अभियान का मुख्य लक्ष्य **महिलाओं के लिए राष्ट्रीय राजधानी को सुरक्षित बनाना**, पीड़ित सहायता को मजबूत करना और रियल-टाइम कार्रवाई सुनिश्चित करना है।
- **उत्तर प्रदेश मॉडल से प्रेरणा:** 2017 में **उत्तर प्रदेश पुलिस के 'एंटी-रोमियो' अभियान** की तर्ज पर इसे लागू किया गया है, जिसका उद्देश्य भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों और शैक्षणिक संस्थानों में महिलाओं के खिलाफ अपराध रोकना था।

डिजिटल परिवर्तन पुरस्कार / Digital Transformation Award

संदर्भ:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को **लंदन में सेंट्रल बैंकिंग द्वारा डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन अवार्ड** प्रदान किया गया। यह सम्मान **आरबीआई की 'सारथी' और 'प्रवाह' पहलों** को मान्यता देता है, जिन्होंने इसके संचालन को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Sarthi और Pravaah:

Sarthi:

- **शुरुआत:** जनवरी 2023 में लॉन्च किया गया।
- **उद्देश्य:** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के आंतरिक कार्यप्रवाह (Internal Workflows) को डिजिटल बनाना।
- **अर्थ:** हिंदी में 'सारथी' का मतलब है 'रथ का चालक'।
- **विशेषताएँ:**
  - RBI के कर्मचारी दस्तावेज़ों को सुरक्षित रूप से स्टोर और साझा कर सकते हैं।
  - रिकॉर्ड रखने को आसान बनाता है और रिपोर्ट व डैशबोर्ड के माध्यम से डेटा विश्लेषण में सुधार करता है।
  - 13,500 से अधिक कर्मचारियों को 40 से अधिक स्थानों पर समर्थन प्रदान करता है।

Pravaah:

- **शुरुआत:** मई 2024 में लॉन्च किया गया।
- **उद्देश्य:** बाहरी नियामक अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित करना।
- **अर्थ:** हिंदी में 'प्रवाह' का मतलब है 'सुव्यवस्थित प्रवाह'।
- **विशेषताएँ:**
  - Sarthi के साथ सहजता से एकीकृत होता है।
  - 70 से अधिक नियामक अनुप्रयोगों के लिए दक्षता और पारदर्शिता में सुधार करता है।

Sarthi और Pravaah: RBI के कामकाज में बदलाव

1. **आवेदनों में बढ़ोतरी:** Pravaah के लॉन्च के बाद से मासिक आवेदनों में 80% की वृद्धि हुई है।
2. **कागजी प्रक्रिया में कमी:** यह बदलाव कागज आधारित प्रणाली से होने वाली देरी को कम करने में सहायक साबित हुआ है।
3. **डिजिटल पहल के लाभ:** आवेदन प्रक्रिया को सरल और सुव्यवस्थित बनाया।
   - आवेदकों और RBI प्रबंधकों के लिए रियल-टाइम ट्रैकिंग की सुविधा उपलब्ध कराई।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

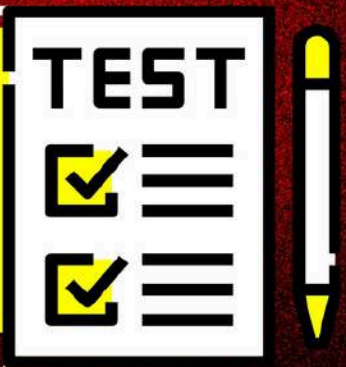

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !